LITERATURE

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में ज्ञानेंद्रपति की कविता में कथनी नहीं, करनी है।

डॉ. शिवकुमार
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
क्राइस्ट कॉलेज (स्वायत्त), इरिंजालकुडा
ई-मेल: agendrashiva2015@gmail.com

सारांश

समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण कवि ज्ञानेंद्रपति की रचनाओं में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की चेतना को केंद्र में रखकर लिखा गया है। ज्ञानेंद्रपति की कविताएं केवल भाषण या नारों तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे मानवीय हस्तक्षेप, चेतावनी और ठोस कार्रवाई की मांग करती हैं। उनकी कविताओं 'बीज व्यथा', 'नदी और साबुन', तथा 'प्यासा कुआँ' में रासायनिक खेती, जल प्रदूषण, संकर बीजों के दुष्परिणाम और पर्यावरणीय क्षरण की गंभीर व्यथा व्यक्त होती है। यह स्पष्ट करता है कि समकालीन कविता अब केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं रही, बल्कि सामाजिक और पारिस्थितिक बदलाव का सशक्त उपकरण बन चुकी है। ज्ञानेंद्रपति की कविताएँ हमें हमारे व्यवहारों पर पुनर्विचार करने और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी निभाने का आह्वान करती हैं।

मुख्य शब्द: ज्ञानेंद्रपति, समकालीन हिंदी कविता, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण, पर्यावरण चेतना, बीज व्यथा, नदी प्रदूषण, प्यासा कुआँ, रासायनिक खेती, देसी बीज, पारिस्थिति की, काव्य और सामाजिक सरोकार

मुख्य आलेख

साहित्य की प्राचीनतम विधा है 'कविता'| हिंदी कविता निरंतर सरिता की तरह गतिशील है। अपनी इसी गतिशीलता के कारण थके हमारे प्यासे राहगीरों की प्यास बूझाकर तथा उनकी परेशानियों को दूर करके उन्हें आश्वस्त करते हैं। कविता यही करती है। निराश हुए लोगों में आशा का भाव जगाती हैं। परेशानी से जूझ रहे जनों को जूझने की ताकत देती है। आचार्य कवि राज शेखर कविता के बारे में कहते हैं कि "किसी कवि की रचना उसके घर में धरी रह जाती है। किसी की मित्र की मंडली तक पहुंचती है, पर किसी-किसी की रचना लोगों की जुबान पर चढ़कर सारी दुनिया में मानो कुतुहूली बनकर सैर करती रहती है।"[1]

आज हिंदी कविता पूरे विश्व के हिंदी रचनाओं और पाठकों को एक साथ एक ही छतरी के नीचे जोड़े रखने में सक्षम रही है।कविता के माध्यम से कवि अपनी बात को समाज में पहुंचने की कोशिश करते हैं।समकालीन हिंदी कविता के कवियों ने इसी लक्ष्य को आगे बढ़ाए रखा है। वह अपने आसपास के अनुभव और घटित घटनाओं को अपनी कविता में उचित स्थान देते हैं। समकालीन कविता 1962-64 से माना जाता है। यह आधुनिक कविता का भाव है। इनका लक्ष्य आम आदमी और समाज के वास्तविक रूप को धरातल पर रख कर चित्रित करना है| वे अनुभवों को अपनी कविता में स्थान देते हैं। चाहे वह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और प्राकृतिक का शोषण ही क्यों न हो, समकालीन कविता के मुख्य कवि मुक्तिबोध, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर सिंह बहादुर, कुमार इंद्र, आलोक धन्वा, श्री राम तिवारी, धूमिल, शलभ, श्री राम सिंह, विजेंद्र पंकज सिंह, निर्मल शर्मा, आनंद प्रकाश, चंचल चौहान, शशि प्रकाश, आदि समकालीन कविता के प्रमुख कवि है।

समकालीन हिंदी कविता में जहां राजनीतिक तीरों वाली कविताएं ही विशेष कर धनुर्धारी कवियों की पहचान बना रहे थे। ज्ञानेंद्रपति ने कविताओं को राजनीति के गलियारे में न ले जाकर अपने समय की मानवीय कार्रवाई बदलने का आह्वान किया है। समकालीन हिंदी कविता के अग्रिम कवि हैं ज्ञानेंद्रपति | जिन्होंनेअपनी कविता के माध्यम से समाज को जागृत करने का प्रयास किया है। उनकी कविता में अवसाद और चिंता के स्वर भी बहुत मिलते हैं। आपने समकालीन हिंदी की कविता को नया रूप प्रदान किया है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर आपने विशेष बल दिया है। इसकी गूँज आपकी कविता में सुनाई देती है |

 ISSN: 2582 - 2594

ज्ञानेंद्रपति की कविता की जड़े मिट्टी में गहरे रूप से पसरी हुई है। यह छोटी सी छोटी सच्चाई को चित्रित करने में सजग रहती है 'ओरों से बात करना, उन्हें समझना, उनकी राह सुलझाना, यह काम सब करते हैं। लेकिन इससे भी कहीं ज्यादा कठिन और मेहनत का काम है। अपने आप को समझाना। यही काम ज्ञानेंद्रपति की कविता पाठकों को अपने आप को आगाह करने, सचेत रहने का काम करती है। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में ज्ञानेंद्रपति की कविता में कथनी नहीं, करनी है।

आज पैसे कमाने के चक्कर में हम अपनी प्राकृतिक चीजों को नष्ट करने में लगे हुए हैं |इसका दुष्परिणाम इतना भयानक होता है कि सालों तक इसे भोगना पड़ता है। फसलों की, फलों की, सब्जियों की पैदावार अधिक से अधिक मात्रा में बढ़ाने के लिए हम रासायनिक खादो और कीटनाशकों का उपयोग करते हैं | इसका उपयोग स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। "हमारे देश में पहली बार 66 कीटनाशकों के प्रतिकूल प्रभाव का अध्ययन करने के बाद 13 बेहद खतरनाक कीटनाशकों को प्रतिबंधित करने की सिफारिश हुई है। जैसे बेनोमाइल, कारब्रइल, डाएजिनान, फेनेरिमोल, ट्रिफिलूरलिन, ट्राईडिमॉर्फ, थियोमेटॉन, सोडियम साइनाइड, मिथेल पाराथिऑन, मेथोक्सी इथल, मरकरी क्लोराइड, लिन्यूरॉन, फेनाथिऑन."[2]

केरल में एंडोसल्फान के खतरनाक असर को लेकर पूरे राज्य में विवाद का मुद्दा है| केरल के कसरकोर्ट में काजू की खेती में एंडोसुलफाम के छिड़काव से क्षेत्र में कैंसर जन्मजात विकार विकलांगता आदि के मामले सामने आए थे। "2011 तक काजू, कपास, चाय, धान, फल और अन्य फसलों पर एंडोसल्फान कीटनाशक का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता था। जब सुप्रीम कोर्ट ने इसके उत्पादन और वितरण पर प्रतिबंध लगा दिया था रसायन के स्वास्थ्य प्रभाव में न्यूरोटॉक्सिसिटी, देर से यौन परिपक्वता, शारीरिक विकृति, विषाक्तता आदि शामिल है| एग्रोकेमिकल के संपर्क में आने से लोग विशेषकर नावजात शिशुओं को विकृति स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं और परिवार के सदस्यों की हानि का सामना करना पडा है।"[3] सिकुड़ती खेती और योग्य जमीनऔर नए-नए शोध के कारण कीटनाशकों का प्रचार प्रसार हमारे देश में बढ़ता जा रहा है भारत जैसे विकासशील देशों में करने के लिए कीटनाशक कंपनियां बहुत जोर लगाए हुए हैं यह हमारे लिए एक खतरे की बात है इन्हीं बातों को ज्ञानेंद्रपति ने बीज व्यथा नामक कविता में उजागर करने की कोशिश की है कि बिना शोर शराबे के कीटनाशक मनुष्य को अन्दर ही अन्दर धीरे-धीरे से मारते जा रहे है।

"रासायनिक खादो और कीटनाशकों के जहरीले संयंत्रों की आयातित, तकनीक
आती है पीछे-पीछे

तुम्हारे घर उजाड़ कर

अपना घर भरने वाली आयातित तकनीक

यहां के अन्न जल में जहर भरने वाली

जहर भरने वाली शिशु मुख से लगी माँ की छाती के अमृतोपम दूध तक में

कहर ढानेवाली बगैर कोहराम"[4]

वास्तव में यह धीमा जहर हमारे शरीर में प्रवेश करने के बाद धीरे-धीरे हमें मृत्यु के मुँह में धकेल देता है। जिससे बच पाना नामुमकिन है।

आज देखा जाए तो भारत के किसान संकर बीजों का इस्तेमाल कृषि के रूप में करते हैं। संकर बीज में दो या दो से अधिक बीजों के गुण आ जाते हैं जिसके चलते यह किसानों को मुनाफा ही मुनाफा दिलाते हैं। आज बाजार में अनाज से लेकर फल और, सब्जी उत्पादों में संकर बीजों का इस्तेमाल किया जाता है। जिससे किसानों को फायदा ही फायदा हो रहा है लेकिन अचानक देसी बीजों का इस्तेमाल कम होने पर कृषि उत्पादों का स्वाद और उसकी गुणवत्ता कम होती जा रही है। आज भी गांव में कई किसान गोबर गोमूत्र और नीम से लेकर देशी बीजों से टिकाऊ खेती कर रहे हैं लेकिनसमय बदलने के साथ हीखेती की नई तकनीक का भी उपयोग में ला रहे हैंगोबर गोमूत्र की जगह रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों ने ले ली साथ ही देसी बीजों की जगह हाइब्रिड बीजों का इस्तेमाल करने लगे। देसी बीजों में यह खासियत होती है कि यह बीज खुद ही जलवायु के अनुसार अपने आप को ढाल लेते और उनकी बुवाई करने के बाद फसलों की पैदावार के साथ-साथ रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहतर बनाती है। देसी बीजों के संरक्षण के लिए न रासायनिक खाद की जरूरत पड़ती है, नअधिक पानी से सिंचाई करने की जरूरत है। इसकी बुवाई करने पर जमाव बेहतर ढंग से होता है और पौधों के विकास से लेकर फसलों की पैदावार भी सुरक्षित ढंग से हो जाती है।

संकर बीजों के उपयोग करने से इसकी फसल के बचाव के लिए रासायनिक खाद और कीटनाशकों का बड़ी मात्रा में उपयोग किया जाता है तथा सिंचाई के लिए अधिक मात्रा में पानी की जरूरत पड़ती है। कवि इन्हीं बातों को यहां चित्रित करने

 ISSN: 2582 - 2594

का प्रयास किया है कि हमें हाइब्रिड को छोड़कर देसी बीजों का उपयोग करना चाहिए। यही बात 'बीज व्यथा' नामक कविता में हमें नजर आती है।

"उन्हे बस अँजुरी भर ही जल चाहिए था।
जीतेजी सिचने के लिए, और तर्पण केलिए
बस अँजुरी भर ही जल
वे नही है आधुनिक पुष्ट दुष्ट संकर बीज
क्रीम - पाउडर की तरह देह में,
रासायनिक खाद - कीटनाशक मले,
बडे-बडे बाँधो के डुबॉब जल के बाथ - टब में नहाते नहलाते|"[5]

आज सच्चाई यही है कि लाभ कमाने के चक्कर में हम देसी बीजों की उपेक्षा कर रहे हैं। जिसका प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर भी पड़ता है।

सिंचाई के लिए ज्यादातर तालाब, कुँए और नदियों के पानी का उपयोग किया जाता है। नदियों से हमें पर्याप्त मात्रा में शुद्ध जल मिलता है लेकिन आज मानव की स्वार्थ पूर्ण प्रवृत्ति के कारण नदियों और तालाबों का पानी प्रदूषित होता जा रहा है। शहरो से निकलने वाला गंदा पानी नदियों में बहा दिया जाता है। इस पानी में सबसे ज्यादा मात्रा साबुन के पानी की होती है। साबुन जिसका उपयोग हम अपने मैले कपड़े को धोने और शरीर के मैल को साफ करने में इस्तेमाल करते हैं। तालाब और नदी के किनारे साबुन से नहाने या कपड़े धोने से साबुन का पानी नदी में मिल जाता और जिससे जल प्रदूषित हो जाता है। साबुन में हानिकारक रसायन सोडियम हाइड्रोक्साइड, ट्राइग्लिसराइड, हाइड्रोलाइसिस आदि मौजूद होते हैं। जो नदियों के पानी में मिल जाने से जल प्रदूषित हो जाता है। इसी बात को ज्ञानेंद्रपति ने अपनी कविता 'नदी और साबुन' में व्यक्त किया है।

"बैंगनी हो गई तुम्हारी शुभ्र त्वचा
हिमालय के होते भी तुम्हारे सिरहाने
हथेली - भर की एक साबुन की टिकिया से
हार गई तुम युद्ध।"[6]

वास्तव में नदी जीवन दायिनी है। मनुष्य स्वार्थ में अंधा होकर उसके मोल को

नहीं समझ रहा । जिससे भविष्य में शुद्ध जल के संकट की भरपाई हम कभी नहीं कर पाएँगे।

शिक्षा हमें ज्ञान के मार्ग की ओर ले जाती है। यह ज्ञान मनुष्य को हित की ओर अग्रसर करता है, लेकिन उसका यही ज्ञान कहां घास चरने को चला जाता है। जब वह अपने घर के कूड़े - कचरे को इधर-उधर फेंक देता है। जैसे सड़क के किनारे, नदी में, नलों में, किसी बड़े गड्ढे में या किसी सूखे कुएँ में। इन कचरों में ज्यादातर प्लास्टिक होते हैं। इससे प्रकृति को बड़ा ही नुकसान होता है। शिक्षा ने लोगों को केवल ज्ञान ही दिया है। उन्हें समझदारी नहीं दी है। एशिया का सबसे स्वच्छ गांव जो भारत के मेघालय राज्य का मौलिन्नोंग गांव है। जहां के लोग स्वच्छता के मामले में समझदार है। गांव के लोग प्रकृति से प्रेम करते हैं। उनको अच्छी तरह से पता है कि प्रकृति को नष्ट करने का मतलब है, स्वयं को नष्ट करना। यहां के लोग प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करते हैं। हर घर के आगे बाँस से बने कूड़ेदान होते हैं। उनमें लोग घर का कचरा डालते हैं, फिर बाद में कचरे को एकत्रित करके उसका निस्तारण करते हैं। क्या देश का हर गांव मौलिन्नोंग नहीं बन सकता। जब मनुष्य अपने कूड़े कचरे को किसी सूखे कुएँ में डालकर उसे कूड़े दान बना देते हैं तो अपनी इस प्रवृत्ति पर घिन महसूस नहीं होती। जिस कुएँ ने जीवन भर मनुष्य को प्यास बुझाने के लिए पानी दिया। अंत में उसके सूख जाने पर उसे कूड़ादान बना देने पर क्या उस कुएँ की सिसकी मनुष्य को सुनाई नहीं देती। यही बात ज्ञानेंद्र पति ने अपनी कविता प्यासा कुआँ में व्यक्त करने का प्रयास किया है।

"प्यास बुझाने को प्यास
प्रतीक्षा करता रहा था कुआँ, महीनों
तब कभी एक
प्लास्टिक की खाली बोतल
आकर गिरी थी
पानी पीकर अन्यमनस्क फेंकी गयी एक प्लास्टिक - बोतल
अब तक हैंड पंप की उसे चिढ़ती आवाज भी नहीं सुन पडती

ISSN: 2582 - 2594

एक गहरा -सा कूडादान है वह अब
उसकी प्यास सिसकी तरह सुनी जा सकती है अब भी
अगर तुम दो पल उस औचक बुढ़ाए कुएँ के पास खड़े
होओ चुप।"[7]

प्लास्टिक का कचरा पर्यावरण को प्रदूषित करके मनुष्य को ही नहीं पशु- पक्षी और पेड़ -पौधों को भी नुकसान पहुंचता है। इस बात का ज्ञान हर मनुष्य को है, मगर स्वार्थ में लिप्त होकर वह आज भी अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आ रहा है। हम अभी से नही चेते तो इसके दुष्परिणाम को भुगतने के लिए तैयार रहना होगा।

ज्ञानेंद्रपति की कविता में जो अभिव्यक्ति का माध्यम बडा ही सहज है और मौजूदा भाषागत लय आकर्षित करती है।समाज में अपनी बात को पहुंचाने का एक माध्यम भी है। खासकर पर्यावरण संरक्षण को लेकर ज्ञानेंद्रपति जैसे कवि चिंतित हैं। उनकी कविताएं हमें पर्यावरण को बचाने के लिए गंभीर रूप से चिंतन और मनन करवाती है। इसीलिए तो प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में ज्ञानेंद्रपति की कविता में कथनी नहीं करनी है।

संदर्भ ग्रथ:-

1. हिन्दी साहित्य ज्ञानकोश खंड 2- पृ - 47- प्रकाशक भाषा परिषद कोलकाता
2. ममता मिश्रा - पृ -13- आउटलुक पत्रिका -2015
3. सौम्या मिश्रा - डाउन टू अर्थ जनवरी 2017
4. ज्ञानेन्द्रपति - पद्य विहार - पृ - 67 - हिन्दी यूजी बोर्ड कालीकट विश्व विद्यालय
5. ज्ञानेन्द्रपति - पद्य विहार - पृ - 67 - हिन्दी यूजी बोर्ड कालीकट विश्व विद्यालय
6. ज्ञानेन्द्रपति-हिन्दी भाषा व्यवहार के विविध आयाम-पृ-82 - नवोदय सेल्स,दरियागंज नई दिल्ली
7. ज्ञानेन्द्रपति-हिन्दी भाषा व्यवहार के विविध आयाम-पृ-82 - नवोदय सेल्स, दरियागंज नई दिल्ली